



॥ श्री पापांकुशा एकादशी व्रत
कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री पापांकुशा एकादशी व्रत कथा ॥

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पापांकुशा एकादशी भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है। इस एकादशी का वर्णन ब्रह्मवैवर्त पुराण में मिलता है।

"पापांकुशा" का अर्थ है—पापों पर अंकुश लगाने वाली। इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट होते हैं, उसे भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होती है तथा अंत में वैकुण्ठ धाम की प्राप्ति होती है।

श्री पापांकुशा एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है?
उसका माहात्म्य और व्रत कथा कृपया बताइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे राजन्! यह एकादशी 'पापांकुशा एकादशी' के नाम से प्रसिद्ध है।
इसका माहात्म्य अत्यंत महान है। अब इसकी पावन कथा सुनो।"

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—

प्राचीन काल में विन्ध्य पर्वत के घने जंगलों में क्रोधन नाम का एक भील (शिकारी) रहता था। उसका जीवन हिंसा, पशु-वध, चोरी और अनेक पापपूर्ण कर्मों में बीतता था। उसने कभी धर्म, दया या सत्कर्मों का पालन नहीं किया।

समय बीतता गया। जब उसका जीवन अंत के निकट पहुँचा, तब उसे अपने पापों का भय सताने लगा। वह सोचने लगा—

"मैंने जीवनभर केवल पाप ही किए हैं। अब मेरा उद्धार कैसे होगा?"
इसी चिंता में वह एक दिन महर्षि अंगिरा के आश्रम पहुँचा। उसने ऋषि के चरणों में प्रणाम किया और विनम्रतापूर्वक कहा—

"हे गुरुदेव! मैंने जीवनभर अनेक पाप किए हैं।

कृपया ऐसा उपाय बताइए जिससे मेरे पापों का नाश हो जाए और मेरा कल्याण हो सके।"

महर्षि अंगिरा ने करुणा से कहा—

"हे पुत्र! आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पापांकुशा एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत करो। भगवान श्रीहरि विष्णु का पूजन, जप और रात्रि-जागरण करो। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे सभी पाप नष्ट हो जाएँगे।" शिकारी ने ऋषि की आज्ञा का पालन किया। उसने पूर्ण श्रद्धा और भक्ति से पापांकुशा एकादशी का व्रत किया, भगवान विष्णु का पूजन किया और द्वादशी के दिन विधिपूर्वक पारण किया।

व्रत के प्रभाव से उसके समस्त पाप नष्ट हो गए। मृत्यु के समय भगवान विष्णु के दिव्य पार्षद उसे लेने आए और वह दिव्य विमान में बैठकर वैकुण्ठ धाम को प्राप्त हुआ।

तब भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे धर्मराज! जो मनुष्य श्रद्धा, भक्ति और नियमपूर्वक पापांकुशा एकादशी का व्रत करता है, उसके जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं। उसे अश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य प्राप्त होता है और अंत में वह मेरे परम धाम वैकुण्ठ को प्राप्त करता है।"

पापांकुशा एकादशी का महत्व

इस दिन भगवान पद्मनाभ (विष्णु) की विशेष पूजा की जाती है। यह व्रत पापों का नाश करने और आत्मशुद्धि का श्रेष्ठ साधन माना गया है।

दान, जप, भजन, तुलसी पूजन तथा रात्रि-जागरण का विशेष महत्व है। इस दिन किए गए सत्कर्म अनेक गुना फलदायी माने गए हैं।

कथा का संदेश

सच्चा पश्चाताप और भगवान की शरण मनुष्य के जीवन को बदल सकते हैं।

चाहे व्यक्ति ने कितने ही पाप किए हों, श्रद्धा और भक्ति से किया गया व्रत उसे ईश्वर की कृपा का पात्र बना सकता है।

भगवान विष्णु अपने भक्तों के पापों का नाश कर उन्हें मोक्ष प्रदान करते हैं।

दया, धर्म, संयम और भक्ति ही जीवन के सच्चे मार्ग हैं।

पापांकुशा एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु आश्विन शुक्ल पक्ष की पापांकुशा एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, उसे सुख, समृद्धि, यश, मानसिक शांति तथा अंत में भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री पापांकुशा एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥